Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

दलित समाज में स्त्री–पुरूष संबंध

अनिल गौतम
शोध छात्र, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 3, Issue 5
Page Number : 359-362

Publication Issue :
September-October-2020

Article History :
Accepted : 20 Sep 2020
Published : 30 Sep 2020

शोधसारांश – स्त्री पुरुष संबंध एक दूसरे की भावनाओं को समझने वाले होते हैं। एक–दूसरे के दुःख–परेशानी में हृदय से साथ देने का प्रयत्न करते हैं। जिससे परिवार को खुशहाल बताएगा तैयार होने में सहयोग मिलता है। ऐसे वातावरण में परिवार व समाज का विकास दिनोदिन होता रहेगा। जो कि देश के विकास मेंम अपना अमूल्य योगदान करने में दलित समाज की भूमिका भी सदैव अविस्मरणीय रही है।

मुख्य शब्द – दलित, समाज, स्त्री, पुरूष, सम्बन्ध, दुःख, वातावरण, अमूल्य।

सदियों के ऐतिहासिक पटल पर गौर करते हैं तो पाते हैं कि महिलाओं को पुरुषों ने अपनी जायदाद समझ रखी थी। अछूत समाज में सवर्णों की अपेक्षा काफी हद तक अपनी स्त्रियों के साथ मानवीयता का व्यवहार किया जाता रहा है। अछूत समाज की स्त्रियाँ अपने पुरुषों के सामने अपनी सहमति–असहमति व्यक्त करती रही हैं। उन पर किसी प्रकार का बंधन जैसी स्थिति नहीं रही है। छिटपुट जगहों पर इसके अपवाद भी देखने को मिल जाया करते रहे हैं। जबकि समूची भारतीय सामाजिक व्यवस्था में गैर–दलित स्त्रियों के प्रति उनके पुरुषों का दृष्टिकोण सामंती रहा है। देश भर में आए दिन स्त्रियों के साथ हुई तरह–तरह की अमानवीयताएं एक खास कौम द्वारा दी जाती रही है। दलित समाज अपनी स्त्रियों के साथ हमेशा से सहयोगात्मक व्यवहार करता आया है। अछूत समाज की स्त्रियाँ भी अपने पुरुष–संबंधों (भाई, पिता, पुत्र, पति आदि के साथ) को पूरी ईमानदारी के साथ निभाती हैं। अछूत समाज के स्त्री–पुरुष मिलकर अपनी स्वतंत्रता, सम्मान व स्वाभिमान की रक्षा करते हैं। वे एक–दूसर के विकास में साधक बनते हैं, बाधक नहीं।

आज के समय में अछूत समाज में स्त्री–पुरुष के बीच बराबरी का भाव अधिकांशतः पाया जाता है। समाज के पढ़े–लिखे परिवारों में यह अधिकतर देखने को मिलता है। नैमिशराय जी की 'सिमटा हुआ आदमी'

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

शीर्षक से कहानी है। जिसमें अछूत भोला सरकारी कार्यालय में चपरासी है। उसके यहां कार्यालय में उसी की जाति के नए साहब आए हैं। जिससे वह खुशी के मारे फूलकर गदगद हुआ जा रहा है। वह जब आफिस से घर आता है तो उसकी पत्नी कलिया किसी बात से नाराज रहती है। भोला कप में चाय डालकर कलिया को देते हुए कहता है– ''ले, चाय पी, गुस्सा थूक, तुझे पता नई अब सब ठीक हो जावैग्गा।''[1] कथन से स्पष्ट है कि अछूत समाज के पुरुषों के हृदय में अपनी स्त्रियों के प्रति समानता व सम्मान का भाव रहता है।

नैमिशराय जी की 'देवता' शीर्षक कहानी में महानायक की जीवनसाथी रमाबाई जी महानायक के उठने से पहले चाय बना देती हैं। चाय की प्याली लिए हुए महानायक को जगाती हैं। महानायक की आँख खुलने पर, रमाबाई का सेवाभाव देखकर, महानायक के हृदय में रमाबाई के प्रति प्यार उमड़ आया। और वे रमा से बोले– ''तुमने चाय पी।'' रमाबाई जवाब में इतना ही कह सकीं, ''अभी नहीं।'' महानायक ने फिर कहा– ''तुम भी अपनी चाय ले आओ।''[2] जब रमाबाई चाय लेकर आती है और नीचे बैठती हैं तो वे बोले थे– ''जमीन पर नहीं मेरे पास बैठो।''[3] बाबा साहेब और रमाबाई के बीच सामाजिक मुद्दों पर बात हो रही थी। तभी महानायक, रमाबाई को हिन्दू धर्म ग्रन्थों में पति–पत्नी के बीच संबंधों के बारे में बताते हैं कि वहां पर पति को देवता माना गया है। यह बात उचित है या अनुचित महानायक द्वारा रमाबाई से पूछने पर उत्तर उचित न मिलने पर वे स्वयं कहते हैं– ''ये गलत बात है रामू। पति जीवनसाथी होता है देवता नहीं। जैसे ही किसी पत्नी ने अपने पति को देवता मान लिया, वहीं से गलत परम्पराएं शुरू हो जाती हैं।''[4] दलित समाज की महिलाओं को समानता व स्वतंत्रता का वातावरण मिलता है। समाज की महिलाएं भी अपने जीवन साथी को कर्तव्य पथ पर चलने में मदद करती हैं। दलित समाज अपनी स्त्रियों को गुलाम बनाकर नहीं रखना चाहता। वह उन्हें तार्किक दृष्टि रखने वाली बनाना चाहता है। इसका सीधा प्रभाव समाज के स्त्री पुरूषों के सम्बन्धों को स्वस्थ रखने में मदद करता है।

आज के दौर में दलित समाज अपनी संस्कृति व धर्म को लेकर द्वन्द्व की स्थिति में है। बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ले ली तो उसी पराए धर्म के लिए अछूत समाज मरा जा रहा है। नैमिशराय जी कहानी धर्म परिवर्तन का अछूत पात्र अरविन्द धर्म बदल कर मुसलमान बनना चाहता है। अखबार में खबर भी छपवा दी जिसे पढ़कर इसकी पत्नी नीलम ने कहा ''कहो अरविन्द, खबर पूरी छपी है ना। सुनकर अरविन्द ने उसकी तरफ देखा और कहा, क्यों? ''तुम्हें अच्छा नहीं लगा?'' चाय का घूँट भरते हुए नीलम ने जवाब दिया था, ''मेरी छोड़िए, तुम्हारे चाहने वाले तथा दलित आंदोलन के झंडाबरदारों को तो अच्छा ही लगा होगा।'' तुरन्त अरविन्द के होठों से निकला था, ''इसका मतलब यह कि तुम्हें अच्छा नहीं

लगा।'' ''मैंने कब कहा कि मुझे बुरा लगा। मैंने तो तुम्हारी न्यूज तुमसे पहले पढ़ी है भई। मुझे तो तुम्हें धन्यवाद देना चाहिए।'' नीलम कुछ पल ठहरी फिर बोली, ''चलिए आप मुझे धन्यवाद दें या न दें। तुम्हें तो धन्यवाद देने के लिए अभी बस फोन आते ही होंगे।''[5]

दलित समाज में स्त्री पुरूष एक–दूसरे की भावनाओं का भरपूर ख्याल रखते हैं दोनों एक दूसरे पर अधिकार रखते हुये बातें करते हैं। जिससे अरविन्द को सारी बात समझ में आ जाती है। आगे इसी में अछूत समाज में कुछ–कुछ लोगों में अपनी जाति को लेकर हीनता बोध बना रहता है। यह समस्या तब अधिक विकराल रूप धारण कर लेती है। जब वे अपने नौकरी पेशा में आने के बाद घर से दूर रहते हैं। वहाँ पर वे अपनी जाति छिपाकर रहने लगते हैं। इसी समस्या का चित्रण ओम प्रकाश वाल्मीकि जी की कहानी 'अंधड़' में हुआ है। इसी स्थिति पर पिता पुत्री के बीच बातचीत में सुक्कड़ की बेटी कुछ ज्यादा ही बोल जाती है। परन्तु उसे अपनी गलती का एहसास भी होता है– ''आई ऐम सॉरी डैड (मुझे दुख है डैड), मेरा मतलब यह नहीं था, लेकिन डैड, यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि इतने वर्षों तक आपने इन सबके बारे में कभी जिक्र तक नहीं किया।'' ''बहुत से कारण थे, पिंकी..... जो पीड़ा मैंने भोगी है, उसका तुम्हें आभास होने नहीं दिया।'' मि0 लाल ने अपने मन की गाँठ खोलने की कोशिश की। पिंकी जैसे सब कुछ जान लेने के उतावली हो उठी थी। ''डैड, वह पीड़ा इन लोगों ने आपको दी थी।'' ''नहीं.....'' मि0 लाल ने दृढ़ता से कहा। ''फिर?'' पिंकी ने आश्चर्य से पूछा। ''सामाजिक सोच और मान्यताओं ने।''[6] इस पर सोचते हुए पिंकी ने कहा– ''मैं नहीं जानती, सामाजिक सोच से आपका आशय क्या है? लेकिन डैड, किसी भी बदलाव के लिए भागना तो समाधान नहीं होता। भागकर तो हम उसे बढ़ा देते हैं।''[7]

अछूत समाज अपनी स्त्रियों को अपने बराबर का अधिकार देने का हिमायती है। महिलाएं भी अपने कुल की मान मर्यादा का ध्यान रखती हैं। यहां पर पिता पुत्री के सवालों से तिलमिलाता नहीं है बल्कि बहुत ही सरलता से जवाब देते हैं। लेखक ने समाज की सच्चाईयों को बहुत ही बेबाक तरीके से बेनकाब किया है।

ओम प्रकाश वाल्मीकि जी की कहानी 'कूड़ाघर' है जिसके पात्र अजबसिंह व सुमित्रा हैं। अछूत व्यक्ति अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित रहते हैं। वे समझते हैं कि सत्ता अपनी विचारधारा की होनी चाहिए। इसलिए अछूत अजब सिंह आरक्षण बचाओ रैली में जाता है। जिसकी खबर उनके ब्राह्मण मकान मालिक को होती है, तो वह सुमित्रा से मकान खाली करने की बात करता है। जब अजब सिंह रैली से वापस आते हैं, तो सुमित्रा चाय देती है और चाय पीते हुए अजब सिंह कहते हैं– ''सब अपने–अपने रास्ते ढूंढ़ रहे हैं...''[8] इतना सुनते ही सुमित्रा तपाक से देखती है– ''क्या हुआ?... ऐसे क्यों कह रहे हो? कुछ निराश लग रहे

हो?'' सुमित्रा ने पूछा। ''कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है.... किसे दोष दें,'' अजब सिंह ने गहरी वेदना से कहा। वह अपने भीतर उठते अन्तर्द्वन्द्व से जूझ रहा था। सुमित्रा की ओर देखते हुए बोला, ''तुम कुछ परेशान लग रही हो? क्या बात है?''[9] सुमित्रा की सोचती–विचारती मुद्रा देखकर, अजब सिंह कुछ ज्यादा ही बेचैन हो उठा। जिज्ञासावश उसने कहा– ''जवाब नहीं दिया... इतनी गुमसुम क्यों हो?'' ''कुछ नहीं है... थोड़ी देर सो जाओ... दफ्तर जाओगे?''[10] अजब सिंह की जीवन साथी सुमित्रा उनके निराशावादी शब्दों से ही अनुमान लगा लेती है कि आरक्षण बचाओ रैली में कुछ ठीक नहीं हुआ है। कुछ गड़बड़ अवश्य है। वह उस कारण को जानना चाहती है। परन्तु उनकी परेशानी देखकर वह घर की परेशानी के बारे में नहीं बताती है। सबसे पहल वह उन्हें खाना–पानी देने का प्रबंध करती है। अछूत समाज में स्त्री पुरुष संबंध एक दूसरे की भावनाओं को समझने वाले होते हैं। एक–दूसरे के दुःख–परेशानी में हृदय से साथ देने का प्रयत्न करते हैं। जिससे परिवार को खुशहाल बताएगा तैयार होने में सहयोग मिलता है। ऐसे वातावरण में परिवार व समाज का विकास दिनोदिन होता रहेगा। जो कि देश के विकास मेंम अपना अमूल्य योगदान करने में दलित समाज की भूमिका भी सदैव अविस्मरणीय रही है।

संदर्भ–

1. नैमिशराय, मोहनदास, मोहनदास नैमिशराय की चुनी हुई कहानियाँ, पृ0 52
2. नैमिशराय, मोहनदास, मोहनदास की चुनी हुई कहानियाँ, पृ0 63
3. वही, पृ0 63
4. वही, पृ0 66
5. वही, पृ0 92
6. वाल्मीकि, ओम प्रकाश, सलाम, पृ0 92
7. वही, पृ0 92
8. वाल्मीकि, ओम प्रकाश, घुसपैठिए, पृ0 56
9. वही, पृ0 56
10. वही, पृ0 56